व्यवसायिक नैतिकता योग शिक्षा की उपादेयता

Dr. Ashok Bhaskar
Asstt. Professor
Dept. of Yoga and Science of Living
Jain Vishwa Bharti Institute, Ladnun

सारांष—*भारत का उच्च शिक्षा तंत्र विश्व का तीसरा सबसे बडा उच्च शिक्षा तंत्र है। सभी को उच्च शिक्षा के समान अवसर सुलभ कराने की नीति के अन्तर्गत सम्पूर्ण देश में महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आजकल वैश्विक अर्थव्यवस्था, धन उत्पत्ति, विकास और संपन्नता की संचालक शक्ति सिर्फ शिक्षा को ही माना गया है। शिक्षा मनुष्य को उदार, चरित्रवान, विद्वान और विचारवान बनाने के साथ—साथ उसमें नैतिकता, समाज और राष्ट्र के प्रति उसके कर्तव्य और मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था की भावना का संचार करती है। यदि उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और उसकी व्यावहारिकता पर विचार किया जाए तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली शिक्षित बेरोजगारों की एक बहुत बड़ी संख्या प्रत्येक वर्ष तैयार करती जा रही है। हमारे इन उच्च संस्थानों के छात्र देश, समाज आरै उनकी समस्याओं से कटे हुए हैं। उच्च शिक्षा की व्यवस्था में एसे बुनियादी बदलाव लाने की जरूरत है जिससे शिक्षा का सही उपयोग हम अपने आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में प्रभावी ढंग से कर सकें। योग के शिक्षा के क्षेत्र में महत्व को विश्व के अनेक देश स्वीकार कर चुके हैं तथा उन्होंने अपनी आधुनिकतम शिक्षा प्रणाली में योग को स्थान देना प्रारम्भ कर दिया है। वह दिन भी दूर नहीं है, जब सम्पूर्ण विश्व योग के शैक्षिक महत्व से अवगत हो जायेगा तथा इसे अपनी सम्पूर्ण शिक्षा में एक अहम जगह देने लगेगा।*

मुख्य शब्द—उच्च शिक्षा, योग, व्यवसायी, नैतिकता

व्यवसाय का शाब्दिक अर्थ है 'पेशा (Occupation), रोजगार, काम धन्धा आदि। व्यवसाय अंग्रेजी भाषा के ''प्रोफेशन'' शब्द का अर्थ है। Profession लैटिन भाषा के शब्द ^^Profiteor^^ से बना है जिसका अर्थ है— स्वीकार करना। सामाजिक विज्ञान शब्दकोष के अनुसार 'व्यवसाय' शब्द का अर्थ है, जो एक उच्च, विशिष्ट ज्ञान एवं कौशल की अपेक्षा करते हैं और यह ज्ञान एवं कौशल कम से कम, भागों में सैद्धान्तिक तौर पर पाठयक्रमों के द्वारा अर्जित किया गया हो, न कि केवल व्यवहार के द्वारा ही। व्यवसाय से हमारा अभिप्राय उस काम से है, जिसमें विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता होती है, और जिसका उद्देश्य लाभ कमाने या लाभ प्राप्त करना होता है। दूसरे शब्दों में व्यवसाय की आचार संहिता के अन्तर्गत ईमानदारी और सेवा भावना से की जाने वाली आर्थिक क्रिया व्यवसाय कहलाती है। व्यवसाय के द्वारा ही मनुष्य खुद को समाज में स्थापित करता है व व्यवसाय व्यक्ति की सामाजिक जरूरत है।

व्यवसाय की परिभाषा–

विभिन्न विद्वानों ने 'व्यवसाय' को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है–

हैने– ''वह मानवीय क्रिया, जो वस्तुओं के क्रय–विक्रय के द्वारा धन उत्पन्न करने या प्राप्त करने से सम्बन्ध रखती है, 'व्यवसाय कहलाती है।''

मेकनाटन– ''व्यवसाय का आशय पारस्परिक लाभ के लिये वस्तुओं, मुद्राओं सेवाओं के विनिमय से है।''

व्हीलर– ''व्यवसाय का अभिप्राय उस संस्था है, जिसका संगठन एवं संचालन निजी लाभ की प्रेरणा के अन्तर्गत समाज को वस्तुऐं तथा सेवाऐं प्रदान करने के लिये किया जाता है।''

व्यवसायिक नैतिकता (Professional Ethics)

व्यवसायिक नैतिकता अर्थात् ऐसा व्यवहार, जो संस्थाओं के संगठनात्मक और मानकों पर आधारित हो तथा व्यवसायी, विशेषज्ञ अपने कौशल, ज्ञान का उपयोग करके किस प्रकार लोगों को सेवा प्रदान करते हैं तथा वह व्यवसायिक नैतिकता का उपयोग करके अपने व्यवसाय में श्रेष्ठता ला सकते हैं, तथा एक व्यवसायी को निर्णय लेने तथा उस निर्णय को अपनी मंजिल तक पहुँचाने की क्षमता होनी चाहिए, जिस प्रकार एक छात्र अपने विषय को नैतिकतानुसार समझता है।

Ethics ग्रीक शब्द 'Ethos' से लिया गया है जिसका अर्थ है प्रथा, चरित्र अथवा मार्गदर्शक, आस्था आदि। ऑक्सफॉर्ड इंगलिश डिक्शनरी के अनुसार आचारनीति नैतिकता से सम्बन्धित होती है। यह नैतिकता का विज्ञान, मानव कर्तव्य के सिद्धान्तों से सम्बद्ध अध्ययन होता है। इसमें नैतिक सिद्धान्त होते हैं जिनके द्वारा एक व्यक्ति निर्देशित होता है। नैतिकता में मानव जीवन तथा संगठनों द्वारा स्वीकृत आचार–व्यवहार के नियम होते हैं। आचारनीति, मानव व्यवहार का अध्ययन एवं दर्शन है जिसमें सही और गलत निर्धारण को देखा जाता है।

व्यावसायिक नैतिकता का अर्थ एवं परिभाषा–

व्यावसायिक नैतिकता अर्थात् व्यवसायी अपने साथ तथा अन्य लोगों के साथ ईमानदारी के साथ पेश आये। व्यवसायी का नैतिक आचरण परिस्थितियों के अनुसार एक व्यवसायी का नैतिक आचरण भिन्न–भिन्न हो सकता है। नैतिक रूप से एक अच्छा व्यवसायी हम उसे कह सकते हैं जो परिस्थिति के अनुसार अपेक्षित मूल्यों का सम्मान करता है। विद्वानों के अनुसार व्यावसायिक नैतिकता की परिभाषायें–

व्हीलर– ''व्यावसायिक नैतिकता वह कला या विज्ञान है जो समाज, विभिन्न वर्गों तथा संस्थाओं के साथ उचित सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखती है, तथा यह नैतिक उत्तरदायित्व निश्चित करती है कि व्यावसायिक आचरण में क्या सही है और क्या गलत।''

गेरेट– ''व्यावसायिक नैतिकता का सम्बन्ध मुख्य रूप से उन व्यावसायिक लक्ष्यों एवं तकनीकों से है, जो विशेष रूप से मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति करती है।''

योग षिक्षा एवं व्यवसायिक नैतिकता–

आधुनिक युग की विभिन्न समस्याओं तथा पाश्चात्य सभ्यता की कमीयों ने आज विश्व समुदाय को योग शिक्षा की ओर उन्मुख होने को बाध्य कर दिया है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों का चहुंमुखी विकास करने से है। एक स्वास्थ व्यक्ति ही किसी देश का अच्छा नागरिक और नैतिकता से ओतप्रोत नागरीक कहलाने का वास्तविक अधिकारी होता है। अस्वस्थ और मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति किसी भी देश की परिपक्व नींव नहीं बन सकता और इस तरह के नागरिकों से युक्त राश्ट्र का शीघ्र ही अन्त हो जाता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि वह अपने राष्ट्र के लिए एक सशक्त नींव तैयार करें व उस राष्ट्र के भविष्य को स्वस्थ बनाये।

'योग' शिक्षा को एक साधन के रूप में आज सभी स्वीकार कर रहे हैं। भारत के सभी प्राचीन महान ग्रन्थों में योग प्रशिक्षण की चर्चा है। शुद्ध एवं सात्विक ज्ञान के लिए भी मनुष्य को अपने चित्त अथवा मन को नियंत्रित करना होता है। हृदय की शुद्धता और मन की शान्ति के बिना गहन चिन्तन कभी संभव नहीं है।

नैतिक विकास में महत्व –

योग विद्या का प्रचलन भारतवर्ष में कम से कम पांच हजार वर्षों से चला आ रहा है। इसकी पृष्ठभूमि में सुचिन्तित एवं परिष्कृत जीवन दर्शन प्राप्त होता है। मानव जीवन की मौलिक समस्या केवल रोटी नहीं है। मूल समस्या है–रोटी को कैसे प्राप्त किया जाये? मानव एक मात्र ऐसा प्राणी है जो यह सोचता है कि रोटी प्राप्त करें पर इस प्रकार से न करें जिससे दूसरों को कष्ट या पीड़ा हो। रोटी प्राप्त करें पर मेहनत कर प्राप्त करें। अपने हिस्से जितना ही उपयोग करें, दुरुपयोग नहीं करें। मानव जीवन में यह आस्था, विश्वास या मूल्य नहीं जुड़ते हैं, विकसित नहीं होते हैं तो मानव जीवन और पशु जीवन में कोई अन्तर नहीं रह जाता। मानव जीवन उस मूल और आस्था पर टिका हुआ है जो जीवन को संतुलित, सम्बद्ध, संतुष्ट व सफल बनाने के लिए आवश्यक है। अतः योग शिक्षा रोटी के साथ–साथ उन मूल्यों पर

विचार करता है जो मनुष्य और पशु के बीच विभेद करता है। उनके आधार और प्रशिक्षण पर बल देता है जिससे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व अर्न्तराष्ट्रीय जीवन स्वस्थ समृद्ध व सार्थक बन सके।

आज वैश्विकरण ने व्यवसायी सम्बन्धि अनेक विसंगतियों को जन्म दिया है। हर क्षेत्र में सकारात्मक पहलुओं की स्थान पर नकारात्मक प्रभाव अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर हो रहे हैं। योग शिक्षा से व्यक्ति को अपनी इंद्रियों पर आवश्यक नियंत्रण रख उन पर अंकुश लगाने की क्षमता प्राप्त होती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति विषय जनित इंद्रियों का दास न होकर उनका स्वामी बनता है और मोहजाल से दूर रहकर पथ भ्रष्ट न होने देने में योग शिक्षा अमूल्य सहयोग प्रदान करती है। वैश्विकरण के प्रभाव से नैतिक एवं शैक्षिक विषमता उपजी है। विद्यार्थियों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का पतन तथा सांस्कृतिक ह्रास हुआ है। इन सभी समस्याओं का निराकरण योग शिक्षा के अन्तर्गत आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों से संभव है। योग साधना से व्यक्ति के आचार–विचार में बहुत अधिक सादगी, सात्विकता और अच्छाईयां आ जाती हैं। संवेगों पर उचित नियंत्रण स्थापित करने और भावात्मक संतुलन बनाए रखने की क्षमता विकसित होती है। यम, नियम, संयम, साधना और समाधि द्वारा नैतिकता संबंधी सद्विचारों और आदतों को पोषित किया जाता है। आज की शिक्षा उपभोक्तावादी प्रवृत्ति को दूर करने में सक्षम नहीं है। आज समाज के सामने मूल्यों और नैतिकता के मापदंडों को बनाए रखने का जो संकट है और आपसी वैमनस्य, ईर्ष्या, शत्रुता और घृणा का जो वातावरण घर–बाहर में व्याप्त है, उसे योग शिक्षा के माध्यम से दूर कर मानव मात्र व विश्व समुदाय के कल्याण की कल्पना को साकार रूप प्रदान किया जा सकता है। योग शिक्षा का एक प्रमुख कार्य जीवन से सम्बन्धित सभी तत्त्वों के प्राचीन व आधुनिक तथा दार्शनिक व वैज्ञानिक प्रस्थानों का अध्ययन करना व समन्वय खोजना है। इसके साथ ही जीवन को सार्थक व सफल दिशा देने वाले मौलिक तत्त्वों का पता लगाकर उनका सामान्यीकरण करना है। योग शिक्षा नैतिकता के महाशत्रु क्रोध तथा उसके अन्य सहयोगियों जैसे ईर्ष्या, घृणा, वैमनस्य आदि पर विजय प्राप्त करने में सहायता करती है। आज आधुनिकीकरण के कारण शिक्षा बाजार की वस्तु हो गई है। शिक्षा, शिक्षा न रहकर उसका व्यवसायिकरण हो गया है। शिक्षा बाजार की वस्तु बनकर मूल्यहीन हो गयी है। आज की शिक्षा विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविक समस्याओं का सामना करने में सक्षम नहीं बना पा रही है। अतः मूल्यपरक व नैतिकता के पुनरोधार के लिए योग के मूल सिद्धान्तों की ओर हमें लौटना होगा। सामाजिक बुराईयों जैसे छल, कपट, धोखाधड़ी, नशीले पदार्थों का सेवन, रिश्वतखोरी, कालाबाजारी, हिंसा, मारकाट

तथा अन्य इन्द्रिय जनित और सांसारिक विषयों की आसक्ति से संबंधित अपराधों की संख्या में कमी लाने के कार्य में भी यौगिक पथ अमूल्य सहयोग प्रदान कर सकता है।

प्राचीन ज्ञान शाखाओं की केंद्रीय विषय वस्तु क्या रही है? इस पर ध्यान दें तो लगेगा कि उस समय जीवन एवं जीवन में दुःख मुक्ति कैसे हो? इस पर अध्ययन केंद्रित था। आधुनिक विद्या शाखाएं प्राकृतिक व सामाजिक घटनाओं के अध्ययन और उससे प्राप्त ज्ञान द्वारा सुख–समृद्धि के संसाधनों के विकास पर केंद्रित है। प्राचीन काल में ज्ञान को जीवन से जोड़ा गया था और दुःख मुक्ति के उपायों की खोज हुई और ध्यान–योग जैसी आध्यात्मिक विकास की प्रणालियां प्रकाष में आईं। दुख के मूल कारण को आंतरिक असंतुलन के रूप में समझा गया। वर्तमान आधुनिक ज्ञान शाखाओं की पृष्ठभूमि में दुख के कारण को वस्तुओं का अभाव माना गया। अतः ज्ञान के विकास के साथ उसका उपयोग संसाधनों के निर्माण में हुआ। उसके परिणामतः आज पदार्थ की प्रचुरता है पर जीवन अषांत होता जा रहा है। आज अपेक्षा है कि ज्ञान विज्ञान को जीवन से जोड़ा जाए।

नीतिशास्त्र का विवेचन व्यक्ति के आदर्शों, शुभ लक्ष्यों एवं चरित्र की दिशा प्रदान करता है। नीतिशास्त्र की समस्या है कि वैयक्तिक आचरण और शुभ का समाजीकरण कैसे हो? व्यक्ति के स्वार्थ समाज के स्वार्थ से टकराते हैं। इसलिए नीतिशास्त्र ऐसे सामाजिक शुभ को खोजता है जो सर्वमान्य हो। अच्छाई और बुराई दोनों सामाजिक हैं। नीतिशास्त्र यह पता लगाता है कि हमें कौन से संकल्प करने चाहिए। योग शिक्षा भी यह बताता है कि जीवन में संतुलन के लिए किस प्रकार के संकल्प करने चाहिए। साथ–साथ यह भी बताता है कि संकल्प के निर्वाह के लिए किस प्रकार की साधना की जानी चाहिए।

निःसंदेह आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है। योग शिक्षा के माध्यम से विज्ञान और अध्यात्म में समन्वय स्थापित कर उच्च शिक्षा को सर्वोत्कृष्ट स्तर पर स्थापित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ–

एमएचआरडी (1989). नेशनल पॉलिसी आन एजुकेशन–1986, पीऑए–1990, न्यु देहलीःगवरनमेटं ऑफ इन्डिया प्रेस.

सिंह, आर. पी. (2010). ऑन ऑपनिंग अ 'वर्ल्ड' क्लास युनिवर्सिटी, यूनिवर्सिटी न्यूज, नई दिल्ली, 48 (37), सितम्बर 13–19, 2010

स्वामी रामदेव : योग साधना एवं योग चिकित्सा रहस्य, दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग, मन्दिर ट्रस्ट, कृपालु बाग आश्रम, कनखल हरिद्वार।

टोमप्रकाश गर्ग एवं संजय दत्ता : योग शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, डॉ0 रांगेय राघव मार्ग, आगरा।
डॉ0 एस0के0 मंगल, डा0 श्रीमती उमा मंगल, डॉ0 सतीश कुमार माना : योग शिक्षा, आर्य बुक डिपो करोल बाग, नई दिल्ली।
राजेश कुमार वैद्य, विजय कुमार वैद्य : योग शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा, सूर्य पब्लिकेशन, द्वारा– आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
शिखा चतुर्वेदी एन0आर0 स्वरूप सक्सेना : उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,आर0लाल बुक डिपो मेरठ।
Singh, J.D. (2011). Higher Education in India- Issues, Challenges and Suggestion. In *Higher Education* (Pp.93-103). Germany: LAMBERT Academic Publishing.